21 जून 2017 को नई दिल्ली में आयोजित इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र के 10वें नारद पुरस्कार समारोह में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र द्वारा संस्थापित नारद पुरस्कार से पत्रकारों को सम्मानित करने के लिए आज आप सबके बीच उपस्थित होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। सबसे पहले आप सभी को नारद जयंती की शुभकामनाएं जो कि पिछले महीने 12 मई (वैशाख कृष्ण द्वितीया) को थी और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की भी शुभकामनाएं। इन पुरस्कारों को देवर्षि नारद के सम्मान में दिया जा रहा है, जिन्हें भारतीय पुराणों में आद्य पत्रकार के रूप में जाना जाता है। प्राचीन काल में आज की तरह आधुनिक संचार माध्यम नहीं थे। अतः, सूचना एवं समाचारों का प्रवाह, प्रसार एवं संचार मौखिक रूप से होता था। देवर्षि नारद धर्म की स्थापना एवं संरक्षा के लिए निरपेक्ष भाव से तीनों लोकों में (देव, मानव एवं दानव) सूचना का आदान–प्रदान करते थे और उनकी इतनी विश्वसनीयता एवं सम्मान था कि शांति एवं युद्ध के समय में भी वे तीनों लोकों में स्वतंत्र विचरण करते थे एवं उनकी सूचना बिना किसी प्रश्न के सभी स्वीकार करते थे।

2. मैं इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र के प्रयासों की सराहना करती हूँ कि उन्होंने अच्छी पत्रकारिता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पिछले एक दशक से प्रतिवर्ष यह पुरस्कार देकर पत्रकार बंधुओं को प्रोत्साहित करने का काम किया है। सकारात्मक पत्रकारिता का अर्थ है जन–चेतना का मन–चेतना में बदल जाना। मैं इस अवसर पर इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के विजेताओं को बधाई देती हूँ।

3. भारतीय पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता के पुनरूत्थान एवं विकास की कहानी है। भारतीय पत्रकारिता का उदय राष्ट्रीय आन्दोलन की पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक चेतना जागृत करने के लिए हुआ। व्यावसायिक उद्देश्यों से दूर तब

त्याग, तपस्या, बलिदान की भावना इनमें मुख्य थी। संस्कृति पर छाये हुए कुहासे को दूर कर भारतीय पत्रकारिता ने उस समय के समाज को दिशानिर्देशित किया। उस समय की पत्रकारिता ने देश की चेतना को जागृत करने वाले स्वतंत्रता आन्दोलन में जन–जन को जोड़ने का काम बखूबी किया। यदि पत्रकारिता को राष्ट्रीयता ने प्रज्ज्वलित किया तो पत्रकारिता ने भी राष्ट्रीयता को उज्ज्वलित कर राष्ट्र के विकास में अनुकूल भूमिका निभाई।

4. इसी तारतम्य में हमें लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी का भी स्मरण करना चाहिए। हमारे अनेक नेता अपने विचारों को जन–जन तक पहुंचाने, विदेशी शासन की आलोचना करने और सामान्य रूप से जागरूकता विकसित करने के उद्देश्य से समाचार पत्रों के साथ सक्रियता से जुड़े हुए थे। ऐसा इस तथ्य के बावजूद हो रहा था जब उपनिवेशी सरकार भारतीय समाचार पत्रों के विरुद्ध थी और उसने प्रेस को विनियमित करने के लिए कई उपाय किए थे।

5. मित्रो! लोकतान्त्रिक समाज के चौथे स्तम्भ द्वारा निभायी जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका से आप सब भलीभाँति परिचित हैं। हम सब हमारे आस–पास घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त करते हैं। इस प्रकार, समाचारों और विचारों के प्रचार–प्रसार के माध्यम से एक जागरूक समाज के निर्माण में मीडिया द्वारा निभायी जाने वाली भूमिका का महत्वपूर्ण स्थान है। एक समय में 'प्रेस' एक प्रचलित शब्द हुआ करता था जब दुनिया में घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी प्राप्त करने का एकमात्र साधन अखबार हुआ करते थे। आज, सूचना के प्रचार–प्रसार के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में टेलीविजन की व्यापकता के कारण 'मीडिया' शब्द सबसे अधिक प्रयोग में है। टेलीविजन की अधिकाधिक लोकप्रियता के बावजूद, जन संचार के माध्यम के रूप में प्रिंट मीडिया की महत्ता में कमी नहीं आई है।

6. किसी ने कहा है कि ''जिस नज़र से आप दुनिया को देखेंगे, आपको दुनिया वैसी ही दिखेगी।'' यह बात बिल्कुल सच है। परंतु एक पत्रकार के रूप में जब आप घटनाक्रम के बारे में जानकारी प्रस्तुत करते हैं तो उसकी मौलिकता, सत्यता एवं निष्पक्षता को बनाए रखना आपका कर्त्तव्य ही नहीं धर्म है। आज मीडिया का चाहे जो भी रूप हो, वह लोगों को शिक्षित एवं जागरूक करने का सबसे लोकप्रिय माध्यम बन गया है और हम सब जानते हैं कि यह हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है। उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे घटनाओं की खबर उसी प्रकार दें, जिस प्रकार वे घटित हुई हैं न कि जैसी उनको नजर आती हैं। घटनाक्रम की रिपोर्टिंग करते समय पत्रकारों को, चीजों को व्यक्तिगत नजरिए से देखने की स्वाभाविक प्रवृत्ति से बचना चाहिए। Someone has rightly said, "Journalism is the first draft of history".

7. मैंने संसद में रहते हुए भी यह महसूस किया है कि कई अवसरों पर उच्चस्तरीय और महत्वपूर्ण वाद–विवाद को समाचार पत्रों, पत्रिकाओं एवं टेलीविजन चैनलों पर उतनी प्रमुखता से नहीं दिखाया जाता है जितनी प्रमुखता से संसद एवं विधानमंडलों में हो रहे व्यवधानों और शोरगुल इत्यादि को दिखाया जाता है। यदि सकारात्मक समाचारों को प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रमुखता से स्थान दिया जाए तो जनता में आशा, भरोसा एवं स्वाभिमान जैसे सकारात्मक भाव पैदा होते हैं जिससे सम्पूर्ण समाज का नैतिक उत्थान होता है। महान राष्ट्र बनने के लिए आदर्श, अनुशासन, मर्यादा, परिश्रम, ईमानदारी जैसे उच्च मानवीय मूल्यों की आवश्यकता होती है। शास्त्रों में लिखा है और इसे मैं उद्धृत करती हूं:–

''सत्यस्य वचनम श्रेयः, सत्यादपि हितम् वदेत्।

सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यम् अप्रियम्।।''

इसका अर्थ है कि सत्य बोलना श्रेयस्कर है किन्तु इससे भी बढ़कर ऐसी बात बोलनी चाहिए जिससे सबका भला हो।

8. हम सब जानते हैं कि लोकतंत्र में मीडिया एक सशक्त और सजग प्रहरी की भूमिका निभाता है। यह सरकार और जनता के ध्यान में लाने योग्य विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा करके लोगों को जागरूक बनाता है और सरकार एवं जनता के बीच में एक कड़ी का काम करता है। सशक्त राष्ट्र के निर्माण में राज्य के सभी अंगों जैसे कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका में आपसी तालमेल (synergy), ऊर्जा का प्रवाह, संयोजन और इन तीनों अवयवों में सामंजस्य होना चाहिए। यह सुनिश्चित हो कि ये सभी अंग एक दूसरे को संबल दें, संपुष्ट करें, और अपने–अपने कार्यक्षेत्र में रहते हुए अपने निर्धारित कर्त्तव्यों का निर्वहन करें। मीडिया की यह जिम्मेदारी होती है कि वह free, frank and fearless हो मगर baseless - sensless नहीं और साथ ही, वह राष्ट्रीयता के गौरव और सांस्कृतिक चेतना की लौ जलाए रखे एवं कार्यपालिका और न्यायपालिका की दक्षता और विधायिका के उत्तरदायित्व के प्रति सजग प्रहरी की भूमिका का सकारात्मक निर्वहन करे।

9. हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषण और 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' को स्वयं नागरिकों के मूल अधिकारों की व्यापक सूची का एक महत्वपूर्ण अंग बनाया है। स्वतंत्रता के बाद नई व्यवस्था के अंतर्गत मीडिया देश के शासन पर निगरानी रखने की भूमिका को सक्रियता से निभाने के साथ–साथ जनता को जानकारी देने और उनकी शिकायतों को मुखर करने के एक माध्यम की भी भूमिका निभा रहा है। अधिकारों के साथ कर्त्तव्य भी जुड़े हुए हैं। कोई भी स्वतंत्रता या अधिकार असीमित नहीं हो सकता। हमारे यहां प्रेस की स्वतंत्रता है, परंतु मीडिया को यह जिम्मेदारी

बहुत सावधानी के साथ निभानी होती है क्योंकि मीडिया श्रोताओं एवं पाठकों के विचारों को प्रभावित करती है। व्यवस्था में खामियों को इंगित करने वाली, तंत्र में मौजूद भ्रष्टाचार को उजागर करने या समाज के विभिन्न वर्गों को प्रभावित करने वाली विशेष एवं गंभीर जांच रिपोर्टें वस्तुतः बहुत स्वागत योग्य होती हैं क्योंकि ये हमें बेहतर राष्ट्र का निर्माण करने की दिशा में अग्रसर होने में सहायता करती है।

10. नई प्रौद्योगिकी के उद्भव होने से Social media जैसे फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप्प के इस नए युग में नित नए प्रयोग हो रहे हैं। ऐसे शक्तिशाली माध्यमों का उपयोग सदैव सकारात्मक ही होना चाहिए। अनावश्यक सनसनी पैदा करने वाली एवं निराशाजनक स्टोरी पर ही आवश्यकता से अधिक ध्यान एवं महत्व देने से समाज एवं देश में ''नैराश्य का भाव'' उत्पन्न होता है और सकारात्मक ऊर्जा का क्षय होता है। मीडिया के सकारात्मक प्रभाव के अनेक उज्ज्वल उदाहरण हैं लेकिन मैं हाल ही के दिनों में स्वच्छ भारत अभियान का उल्लेख करना चाहूंगी। इस अभियान का व्यापक प्रभाव सारे देश में बिल्कुल साफ दिख रहा है और संपूर्ण देश में विशेषकर युवा वर्ग में स्वच्छता के प्रति एक नई जागरूकता एवं आग्रह स्पष्ट नज़र आता है, इसमें सरकार, जनता के साथ–साथ मीडिया की भी उतनी ही सकारात्मक भूमिका है।

11. पत्रकार तो वह होता है जो बिना लाग–लपेट के, अपनी जान पर खेलकर भी सच को उजागर करे। कई बहादुर पत्रकारों ने मुश्किल परिस्थितियों में पत्रकारिता की और यहां तक कि अपनी जान भी गंवाई है, पर इस बिरादरी ने अपने कर्त्तव्यपथ से कभी मुख नहीं मोड़ा है। गणेश शंकर विद्यार्थी, दीन दयाल उपाध्याय, बाल गंगाधर तिलक एवं मदन मोहन मालवीय आदि पत्रकारिता के श्रेष्ठ एवं दैदीप्यमान उदाहरण हैं जिन्होंने पत्रकारिता के उच्चतम मानदंडों को स्थापित किया

और वे आज भी न केवल पत्रकारिता बल्कि सम्पूर्ण समाज एवं राष्ट्र के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

12. समाज एवं राष्ट्र के लिए सकारात्मक योगदान करने वाले पत्रकारों के अच्छे काम की सराहना करना और उन्हें सम्मानित करना एक स्वागत योग्य कदम है। मुझे बताया गया है कि इस साल महिला–पुरुष, ग्रामीण क्षेत्र, सोशल मीडिया और युवा जैसे नए वर्गों में भी पुरस्कार दिए जा रहे हैं। आपके उत्कृष्ट कार्य की प्रशंसा एवं सम्मान से पत्रकार बिरादरी को और प्रेरणा मिलेगी। इससे न केवल आम नागरिकों को जागरूक बनाने, लोकतंत्र के सशक्तिकरण एवं शासन में पारदर्शिता के युग का सूत्रपात होगा बल्कि देश के प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त होगा। मैं एक बार फिर सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देती हूँ और अच्छे समाज के विकास के लिए पत्रकारों के योगदान को सम्मानित करने की इस सुविचारित पहल के लिए इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र की सराहना करती हूँ। सभी पुरस्कार विजेताओं को उनके भावी प्रयासों में सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

13. In the end, the discipline of verification is what separates journalism from entertainment propaganda, fiction or art. It means that Journalism is a very sacred profession that needs to be handled very carefully.

धन्यवाद।

————